सुनीता जैन के साहित्य में स्त्री-अस्मिता और मानवीय संवेदना

चंदा कुमारी, शोधार्थी

डॉ. कुमारी आशा, शोध निर्देशक

बी आर ए बी यूनिवर्सिटी मुजफ्फरपुर

शोध-सार

समकालीन हिंदी साहित्य में सुनीता जैन एक महत्वपूर्ण और बहुआयामी रचनाकार के रूप में प्रतिष्ठित हैं। उन्होंने कविता, कहानी, उपन्यास, संस्मरण तथा अनुवाद के माध्यम से हिंदी साहित्य को समृद्ध करते हुए स्त्री जीवन और मानवीय संबंधों के विविध आयामों को अभिव्यक्ति प्रदान की है। उनके साहित्य का मूल स्वर स्त्री-अस्मिता और मानवीय संवेदना है। प्रस्तुत शोध आलेख में सुनीता जैन के साहित्य में निहित स्त्री-चेतना, आत्मसम्मान, स्वतंत्र अस्तित्व की आकांक्षा तथा मानवीय मूल्यों के स्वरूप का विश्लेषण किया गया है। उनकी रचनाओं में स्त्री केवल सामाजिक विसंगतियों की शिकार नहीं है, बल्कि वह अपने अधिकारों, अस्मिता और आत्मनिर्णय के प्रति सजग व्यक्तित्व के रूप में उपस्थित होती है। साथ ही प्रेम, करुणा, पारिवारिक आत्मीयता, संबंधों की ऊष्मा तथा आधुनिक जीवन में बढ़ते अकेलेपन जैसी मानवीय अनुभूतियों का भी प्रभावशाली चित्रण मिलता है। प्रवासी जीवन के अनुभवों ने उनके साहित्य को व्यापक सांस्कृतिक दृष्टि प्रदान की है, जिसके कारण भारतीय जीवन-मूल्यों और वैश्विक अनुभवों का संतुलित समन्वय दिखाई देता है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सुनीता जैन ने स्त्री-विमर्श को मानवीय संवेदना के व्यापक धरातल से जोड़कर हिंदी साहित्य को नई वैचारिक गहराई प्रदान की है।

बीज-शब्द : सुनीता जैन, स्त्री-अस्मिता, मानवीय संवेदना, स्त्री-विमर्श, पारिवारिक संबंध, प्रवासी चेतना, समकालीन हिंदी साहित्य।

प्रस्तावना

हिंदी साहित्य के समकालीन परिदृश्य में महिला लेखन ने अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित की है। विशेषतः बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से स्त्री-अनुभव, स्त्री-अस्मिता और सामाजिक समानता के प्रश्न साहित्यिक विमर्श के केंद्र में आए हैं। इस दौर में अनेक महिला रचनाकारों ने अपने लेखन के माध्यम से स्त्री जीवन के विविध आयामों को अभिव्यक्ति प्रदान की। सुनीता जैन ऐसी ही महत्वपूर्ण साहित्यकार हैं, जिन्होंने कविता, कहानी, उपन्यास, संस्मरण तथा अनुवाद जैसी विभिन्न विधाओं में सृजन करते हुए हिंदी साहित्य को समृद्ध किया। उनका साहित्य स्त्री-जीवन के यथार्थ, मानवीय संबंधों की जटिलताओं तथा सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तनों का संवेदनशील दस्तावेज है।[1] सुनीता जैन का रचनाकर्म स्त्री-अस्मिता और मानवीय संवेदना के द्वंद्वात्मक संबंध को समझने की दृष्टि प्रदान करता है। उनकी रचनाओं में स्त्री केवल संघर्षशील पात्र नहीं है, बल्कि वह आत्मसम्मान, आत्मनिर्णय और स्वतंत्र अस्तित्व की आकांक्षा रखने वाली सजग व्यक्तित्व के रूप में उपस्थित होती है। वे स्त्री-मुक्ति के प्रश्न को केवल अधिकारों की मांग तक सीमित नहीं रखतीं, बल्कि उसे मानवीय गरिमा और सामाजिक न्याय के व्यापक संदर्भों से जोड़ती हैं।[2] उनके साहित्य का दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष मानवीय संवेदना है। आधुनिक जीवन की भागदौड़, उपभोक्तावादी प्रवृत्तियों और संबंधों के विघटन के बीच वे प्रेम, करुणा, आत्मीयता और पारिवारिक मूल्यों की पुनर्स्थापना का प्रयास करती हैं। उनके कथा-साहित्य और काव्य में व्यक्ति के अकेलेपन, संबंधों की टूटन और भावनात्मक रिक्तता का मार्मिक चित्रण मिलता है।[3]

विदेश में लंबे समय तक निवास करने के कारण उनके साहित्य में प्रवासी अनुभवों की भी महत्त्वपूर्ण उपस्थिति है। भारतीय संस्कृति, स्मृति और पहचान से जुड़े प्रश्न उनकी रचनाओं को विशिष्ट आयाम प्रदान करते हैं। इस प्रकार उनका साहित्य भारतीयता और वैश्विक अनुभवों के मध्य एक सार्थक संवाद स्थापित करता है।[4] प्रस्तुत शोध आलेख का उद्देश्य सुनीता जैन के साहित्य में स्त्री-अस्मिता और मानवीय संवेदना के स्वरूप का विश्लेषण करना है। साथ ही यह अध्ययन उनके साहित्यिक अवदान को समकालीन हिंदी साहित्य के व्यापक परिप्रेक्ष्य में समझने का प्रयास करता है।

[1] सिंह, रोहिणी अग्रवाल, हिंदी साहित्य में स्त्री लेखन, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013, पृ. 52।

[2] पाण्डेय, मैनेजर, साहित्य और समाज, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010, पृ. 118।

[3] शर्मा, सविता, समकालीन हिंदी महिला लेखन और स्त्री विमर्श, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016, पृ. 96।

[4] तिवारी, रमेश, प्रवासी हिंदी साहित्य : स्वरूप और संवेदना, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2017, पृ. 61।

सुनीता जैन : जीवन और रचनात्मक व्यक्तित्व

समकालीन हिंदी साहित्य में सुनीता जैन का नाम एक बहुमुखी और सशक्त रचनाकार के रूप में प्रतिष्ठित है। उनका जन्म 13 जुलाई 1941 को अंबाला (हरियाणा) में हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा भारत में प्राप्त करने के बाद उन्होंने उच्च शिक्षा के लिए अमेरिका का रुख किया और वहाँ से अंग्रेज़ी साहित्य में उच्च अध्ययन तथा शोध कार्य सम्पन्न किया। भारतीय और पाश्चात्य दोनों संस्कृतियों के निकट अनुभव ने उनके व्यक्तित्व और साहित्यिक दृष्टि को व्यापक आयाम प्रदान किया।[5] सुनीता जैन ने हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में विपुल लेखन किया। उन्होंने कविता, कहानी, उपन्यास, संस्मरण, अनुवाद तथा आलोचना जैसी विविध साहित्यिक विधाओं में अपनी रचनात्मक प्रतिभा का परिचय दिया। उनके साहित्य में जीवन के सूक्ष्म अनुभवों, मानवीय संबंधों, स्त्री-मन की जटिलताओं और सामाजिक यथार्थ का अत्यंत संवेदनशील चित्रण मिलता है। वे उन चुनिंदा भारतीय साहित्यकारों में हैं जिन्होंने दो भाषाओं में समान दक्षता के साथ लेखन करते हुए अपनी विशिष्ट पहचान बनाई।[6] उनकी रचनात्मकता का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष स्त्री जीवन और मानवीय संवेदना के प्रति उनकी गहरी प्रतिबद्धता है। उनकी कविताओं और कथाओं में स्त्री अपने स्वतंत्र अस्तित्व, आत्मसम्मान और आत्मनिर्णय की चेतना के साथ उपस्थित होती है। साथ ही परिवार, प्रेम, स्मृति, अकेलापन और बदलते सामाजिक संबंधों की अभिव्यक्ति उनके साहित्य को व्यापक मानवीय धरातल प्रदान करती है।[7]

सुनीता जैन की साहित्यिक उपलब्धियों को राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक सम्मान प्राप्त हुआ। उन्हें हिंदी साहित्य में उल्लेखनीय योगदान के लिए भारत सरकार द्वारा पद्मश्री सम्मान से अलंकृत किया गया। इसके अतिरिक्त उन्हें व्यास सम्मान सहित अनेक प्रतिष्ठित साहित्यिक पुरस्कार प्राप्त हुए। उनकी रचनाएँ न केवल हिंदी साहित्य की महत्वपूर्ण धरोहर हैं, बल्कि समकालीन भारतीय समाज और संस्कृति को समझने का एक महत्त्वपूर्ण माध्यम भी हैं।[8] इस प्रकार सुनीता जैन का रचनात्मक व्यक्तित्व साहित्यिक प्रतिबद्धता, सांस्कृतिक चेतना और मानवीय संवेदना का समन्वित रूप है। उनका

[5] जैन, निर्मला, समकालीन हिंदी साहित्य और महिला लेखन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014, पृ. 87।
[6] सिंह, रोहिणी अग्रवाल, स्त्री लेखन : स्वप्न और संकल्प, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011, पृ. 103।
[7] शर्मा, सविता, समकालीन हिंदी महिला लेखन और स्त्री विमर्श, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016, पृ. 121।
[8] जैन, सुनीता, शब्दकाया, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005, भूमिका, पृ. 9

साहित्य स्त्री-अस्मिता और मानवीय मूल्यों की स्थापना का सशक्त दस्तावेज़ है, जिसने हिंदी साहित्य को नई वैचारिक दिशा और संवेदनात्मक गहराई प्रदान की है।

सुनीता जैन के साहित्य में स्त्री-अस्मिता

समकालीन हिंदी साहित्य में स्त्री-अस्मिता का प्रश्न एक महत्वपूर्ण विमर्श के रूप में उभरा है। स्त्री-अस्मिता का आशय स्त्री की स्वतंत्र पहचान, आत्मसम्मान, आत्मनिर्णय तथा सामाजिक-सांस्कृतिक अस्तित्व की स्वीकृति से है। हिंदी की जिन रचनाकारों ने इस प्रश्न को गंभीरता और संवेदनशीलता के साथ अभिव्यक्त किया है, उनमें सुनीता जैन का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनके साहित्य में स्त्री केवल पारंपरिक भूमिकाओं तक सीमित नहीं रहती, बल्कि वह अपने व्यक्तित्व, अधिकारों और अस्तित्व के प्रति सजग दिखाई देती है।[9] सुनीता जैन की रचनाओं में स्त्री जीवन के विविध अनुभवों का अत्यंत सूक्ष्म और यथार्थपरक चित्रण मिलता है। वे स्त्री को पुरुष-विरोधी दृष्टि से नहीं देखतीं, बल्कि उसे समाज और परिवार की संरचना के भीतर अपनी पहचान बनाने के लिए संघर्षरत मनुष्य के रूप में प्रस्तुत करती हैं। उनकी स्त्रियाँ सामाजिक मर्यादाओं और पारिवारिक दायित्वों को समझते हुए भी अपनी स्वतंत्र चेतना को बनाए रखने का प्रयास करती हैं। इस दृष्टि से उनका स्त्री-विमर्श भारतीय सामाजिक यथार्थ से जुड़ा हुआ दिखाई देता है।[10] सुनीता जैन के साहित्य में स्त्री की आत्मचेतना का स्वर अत्यंत मुखर है। उनकी अनेक रचनाओं में स्त्री अपने भीतर के द्वंद्व, पीड़ा और आकांक्षाओं को पहचानती है तथा स्वयं को एक स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में स्थापित करने का प्रयास करती है। वह केवल पत्नी, माँ या पुत्री की सामाजिक भूमिकाओं तक सीमित नहीं रहना चाहती, बल्कि अपने अस्तित्व की सार्थकता को स्वयं परिभाषित करना चाहती है। यह आत्मचेतना उनकी स्त्री-पात्रों को पारंपरिक छवियों से अलग एक नई पहचान प्रदान करती है।[11] उनकी रचनाओं में स्त्री की अस्मिता का प्रश्न परिवार और समाज दोनों स्तरों पर उभरता है। आधुनिक जीवन में बदलते सामाजिक संबंधों, उपभोक्तावादी प्रवृत्तियों और व्यक्तिवादी सोच के कारण स्त्री अनेक प्रकार की चुनौतियों का सामना करती है। सुनीता जैन इन चुनौतियों को केवल सामाजिक समस्या के रूप में नहीं, बल्कि मानवीय संवेदना के संकट के रूप में भी देखती हैं। उनकी स्त्रियाँ संबंधों को तोड़ने के बजाय उनमें सम्मान, संवाद और समानता की तलाश

[9] सिंह, रोहिणी अग्रवाल, हिंदी साहित्य में स्त्री लेखन, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013, पृ. 91।

[10] शर्मा, सविता, समकालीन हिंदी महिला लेखन और स्त्री विमर्श, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016, पृ. 115।

[11] पाण्डेय, मैनेजर, साहित्य और समाज, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010, पृ. 142।

करती हैं। इस प्रकार उनका साहित्य संघर्ष और समन्वय दोनों की संभावनाओं को रेखांकित करता है। सुनीता जैन की स्त्री पात्रों में आत्मसम्मान की भावना विशेष रूप से दिखाई देती है। वे किसी भी प्रकार के मानसिक या भावनात्मक शोषण को सहज रूप से स्वीकार नहीं करतीं। उनके भीतर अपने अधिकारों और गरिमा के प्रति सजगता दिखाई देती है। यह सजगता उन्हें आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास की ओर प्रेरित करती है। उनकी दृष्टि में स्त्री की मुक्ति केवल बाह्य स्वतंत्रता में नहीं, बल्कि उसके आत्मबोध और आत्मविश्वास में निहित है। प्रवासी अनुभवों ने भी उनके स्त्री-विमर्श को व्यापक आयाम प्रदान किया है। विदेश में रहने के कारण उन्होंने भारतीय और पाश्चात्य समाज में स्त्री की स्थिति का तुलनात्मक अनुभव प्राप्त किया। उनकी रचनाओं में यह अनुभव अनेक रूपों में अभिव्यक्त हुआ है। वे यह स्वीकार करती हैं कि सामाजिक परिस्थितियाँ भिन्न हो सकती हैं, किंतु स्त्री की पहचान और सम्मान का प्रश्न सार्वभौमिक है। इसी कारण उनकी स्त्री चेतना स्थानीय सीमाओं से आगे बढ़कर वैश्विक मानवीय दृष्टि का रूप ग्रहण कर लेती है।

सुनीता जैन का स्त्री-विमर्श उग्र प्रतिरोध या वैचारिक आक्रामकता के बजाय संवेदनशील आत्मस्वीकृति और आत्मनिर्णय पर आधारित है। वे स्त्री और पुरुष को परस्पर विरोधी शक्तियों के रूप में नहीं, बल्कि समान गरिमा वाले मानवीय अस्तित्वों के रूप में देखती हैं। उनकी रचनाओं में स्त्री की स्वतंत्रता का अर्थ सामाजिक संबंधों से विमुख होना नहीं, बल्कि सम्मानजनक और समान भागीदारी प्राप्त करना है। यही दृष्टि उनके साहित्य को संतुलित और व्यापक मानवीय आधार प्रदान करती है। इस प्रकार सुनीता जैन के साहित्य में स्त्री-अस्मिता का स्वर बहुआयामी रूप में अभिव्यक्त हुआ है। उनकी रचनाएँ स्त्री के आत्मबोध, आत्मसम्मान, स्वतंत्र अस्तित्व और मानवीय गरिमा की स्थापना का सशक्त दस्तावेज़ हैं। उन्होंने स्त्री-विमर्श को केवल अधिकारों की बहस तक सीमित न रखकर उसे मानवीय संवेदना और सामाजिक उत्तरदायित्व के व्यापक परिप्रेक्ष्य से जोड़ा है। यही कारण है कि उनका साहित्य समकालीन हिंदी स्त्री लेखन में विशिष्ट स्थान रखता है और आज भी अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए है।

सुनीता जैन के साहित्य में मानवीय संवेदना

सुनीता जैन के साहित्य का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष उसकी गहन मानवीय संवेदना है। उनके रचनाकर्म में मनुष्य और उसके जीवनानुभव केंद्र में हैं। उन्होंने आधुनिक जीवन की जटिलताओं, संबंधों के बदलते स्वरूप, अकेलेपन, प्रेम, करुणा, स्मृति तथा पारिवारिक मूल्यों को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ अभिव्यक्त किया है। उनके लिए साहित्य केवल

सौंदर्यबोध का माध्यम नहीं, बल्कि मनुष्य की भावनात्मक और नैतिक दुनिया को समझने का साधन भी है। यही कारण है कि उनकी रचनाओं में जीवन के छोटे-छोटे अनुभव भी गहरी मानवीय अर्थवत्ता प्राप्त कर लेते हैं।[12] सुनीता जैन के साहित्य में पारिवारिक संबंधों की आत्मीयता प्रमुख रूप से दिखाई देती है। परिवार उनके लिए केवल सामाजिक संस्था नहीं, बल्कि भावनात्मक सुरक्षा और मानवीय मूल्यों का आधार है। उनकी कविताओं और कहानियों में माँ, पिता, पति, पत्नी, पुत्र-पुत्री तथा अन्य पारिवारिक संबंधों का अत्यंत मार्मिक चित्रण मिलता है। वे आधुनिक जीवन में परिवार के विघटन और संबंधों में बढ़ती दूरी को गहरी चिंता के साथ देखती हैं। उनके साहित्य में संबंधों की ऊष्मा को बचाए रखने की आकांक्षा स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।[13]

मानवीय संवेदना का दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष प्रेम और करुणा की भावना है। सुनीता जैन के साहित्य में प्रेम केवल स्त्री-पुरुष संबंधों तक सीमित नहीं है, बल्कि वह व्यापक मानवीय सह-अस्तित्व का प्रतीक बन जाता है। उनकी रचनाओं में प्रेम जीवन को अर्थ प्रदान करने वाली शक्ति के रूप में उपस्थित है। इसी प्रकार करुणा का भाव भी उनके साहित्य का अभिन्न अंग है। वे समाज के उपेक्षित, अकेले और संघर्षरत व्यक्तियों के प्रति गहरी सहानुभूति व्यक्त करती हैं। उनके साहित्य में मनुष्य के दुःख और पीड़ा के प्रति संवेदनशील दृष्टि दिखाई देती है, जो पाठक के भीतर मानवीयता का भाव जागृत करती है।[14] आधुनिक जीवन में बढ़ता अकेलापन और भावनात्मक रिक्तता भी उनके साहित्य का महत्वपूर्ण विषय है। शहरीकरण, उपभोक्तावाद और व्यक्तिवाद के कारण मनुष्य अपने ही संबंधों से दूर होता जा रहा है। सुनीता जैन ने इस स्थिति को अत्यंत सूक्ष्मता से समझा और अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त किया। उनके पात्र बाहरी रूप से सफल दिखाई देते हैं, किंतु भीतर से वे अकेलेपन और असुरक्षा की भावना से जूझते रहते हैं। इस प्रकार उनका साहित्य आधुनिक जीवन की उन विडंबनाओं को सामने लाता है, जो मनुष्य की संवेदनात्मक दुनिया को प्रभावित करती हैं।[15]

स्मृति का भाव भी उनकी मानवीय संवेदना का महत्वपूर्ण आयाम है। उनकी रचनाओं में अतीत केवल बीता हुआ समय नहीं है, बल्कि वर्तमान को अर्थ देने वाली जीवंत अनुभूति है। बचपन, परिवार, घर, रिश्ते और सांस्कृतिक परिवेश से

[12] जैन, सुनीता, कहाँ मिलेगी कविता, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010, पृ. 21।
[13] गुप्ता, उर्मिला, समकालीन हिंदी कथा साहित्य में नारी चेतना, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2014, पृ. 91।
[14] शर्मा, सविता, समकालीन हिंदी महिला लेखन और स्त्री विमर्श, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016, पृ. 134।
[15] पाण्डेय, मैनेजर, साहित्य और समाज, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010, पृ. 156।

जुड़ी स्मृतियाँ उनके साहित्य में बार-बार उभरती हैं। ये स्मृतियाँ व्यक्ति को उसकी जड़ों से जोड़ती हैं और उसके अस्तित्व को स्थायित्व प्रदान करती हैं। स्मृति के माध्यम से वे जीवन की निरंतरता और मानवीय संबंधों की महत्ता को रेखांकित करती हैं।[16] प्रवासी अनुभवों ने भी उनकी मानवीय संवेदना को व्यापक बनाया है। विदेश में रहते हुए उन्होंने विस्थापन, सांस्कृतिक दूरी और पहचान के संकट को निकट से अनुभव किया। उनके साहित्य में प्रवासी जीवन की मानसिक अवस्थाओं, मातृभूमि के प्रति लगाव और सांस्कृतिक स्मृतियों की गहन अभिव्यक्ति मिलती है। वे प्रवास को केवल भौगोलिक दूरी के रूप में नहीं, बल्कि भावनात्मक और सांस्कृतिक अनुभव के रूप में प्रस्तुत करती हैं। इस कारण उनकी संवेदना राष्ट्रीय सीमाओं से आगे बढ़कर वैश्विक मानवीय अनुभवों तक पहुँच जाती है।[17]

सुनीता जैन के साहित्य में मानवीय मूल्यों की स्थापना का आग्रह भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। वे ऐसे समय में लिख रही थीं जब समाज में नैतिक मूल्यों का संकट बढ़ रहा था। उनकी रचनाएँ प्रेम, विश्वास, सहिष्णुता, सहानुभूति और आत्मीयता जैसे मूल्यों को पुनः स्थापित करने का प्रयास करती हैं। उनके साहित्य में मनुष्य की गरिमा और उसके अस्तित्व के प्रति गहरा सम्मान दिखाई देता है। यही कारण है कि उनका साहित्य केवल यथार्थ का चित्रण नहीं करता, बल्कि बेहतर मानवीय समाज की कल्पना भी प्रस्तुत करता है।[18] इस प्रकार सुनीता जैन के साहित्य में मानवीय संवेदना बहुआयामी रूप में व्यक्त हुई है। पारिवारिक संबंधों की आत्मीयता, प्रेम और करुणा, अकेलेपन की पीड़ा, स्मृतियों की ऊष्मा, प्रवासी अनुभवों की जटिलता तथा मानवीय मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता उनके साहित्य को विशिष्ट बनाती है। उनकी रचनाएँ पाठक को मनुष्य और उसके संबंधों के प्रति अधिक संवेदनशील बनने की प्रेरणा देती हैं। यही मानवीय दृष्टि उनके साहित्य को स्थायी महत्त्व प्रदान करती है और समकालीन हिंदी साहित्य में उन्हें विशिष्ट स्थान दिलाती है।

स्त्री-अस्मिता और मानवीय संवेदना का अंतर्संबंध

सुनीता जैन के साहित्य की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि उसमें स्त्री-अस्मिता और मानवीय संवेदना परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि एक-दूसरे की पूरक अवधारणाओं के रूप में उपस्थित हैं। उनकी रचनाओं में स्त्री की पहचान, स्वतंत्रता और

[16] सिंह, रोहिणी अग्रवाल, स्त्री लेखन : स्वप्न और संकल्प, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011, पृ. 118।

[17] तिवारी, रमेश, प्रवासी हिंदी साहित्य : स्वरूप और संवेदना, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2017, पृ. 97।

[18] जैन, निर्मला, समकालीन हिंदी साहित्य और महिला लेखन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014, पृ. 142।

आत्मसम्मान का प्रश्न केवल स्त्री तक सीमित नहीं रहता, बल्कि व्यापक मानवीय मूल्यों और सामाजिक संबंधों से जुड़ जाता है। यही कारण है कि उनका साहित्य स्त्री-विमर्श की संकीर्ण सीमाओं से आगे बढ़कर समग्र मानवीय चेतना का साहित्य बन जाता है।[19] सुनीता जैन की स्त्री पात्र अपने अस्तित्व और अधिकारों के प्रति सजग हैं, किंतु उनकी चेतना केवल प्रतिरोध या विद्रोह तक सीमित नहीं रहती। वे संबंधों को नष्ट करने के बजाय उन्हें अधिक मानवीय और समानतापूर्ण बनाने का प्रयास करती हैं। उनकी दृष्टि में स्त्री-अस्मिता का अर्थ सामाजिक और पारिवारिक दायित्वों से विमुख होना नहीं, बल्कि सम्मान और गरिमा के साथ जीवन जीने का अधिकार प्राप्त करना है। इस प्रकार उनकी स्त्री चेतना मानवीय संवेदनाओं के संरक्षण और विकास से गहराई से जुड़ी हुई है।[20]

उनके साहित्य में स्त्री की पीड़ा, संघर्ष और आत्मसंघर्ष का चित्रण करते समय भी मानवीय करुणा और सहानुभूति का भाव प्रमुख रहता है। वे स्त्री के प्रश्नों को केवल लैंगिक असमानता के संदर्भ में नहीं देखतीं, बल्कि उन्हें मनुष्य की गरिमा, स्वतंत्रता और आत्मसम्मान से संबंधित व्यापक प्रश्नों के रूप में प्रस्तुत करती हैं। यही कारण है कि उनकी रचनाएँ स्त्री और पुरुष दोनों के लिए समान रूप से प्रासंगिक बन जाती हैं।[21] पारिवारिक संबंधों, प्रेम, स्मृति और आत्मीयता के चित्रण में भी यह अंतर्संबंध स्पष्ट दिखाई देता है। उनकी रचनाओं में स्त्री अपनी पहचान की खोज करते हुए भी संबंधों की गरिमा और मानवीय मूल्यों को बनाए रखने का प्रयास करती है। इस दृष्टि से सुनीता जैन का साहित्य संघर्ष और संवेदना, अधिकार और उत्तरदायित्व तथा आत्मबोध और सह-अस्तित्व के बीच संतुलन स्थापित करता है।[22]

अतः कहा जा सकता है कि सुनीता जैन के साहित्य में स्त्री-अस्मिता और मानवीय संवेदना एक-दूसरे से गहराई से जुड़ी हुई हैं। यही अंतर्संबंध उनके रचनाकर्म को विशिष्ट बनाता है तथा उसे समकालीन हिंदी साहित्य में स्थायी महत्त्व प्रदान करता है।

निष्कर्ष

[19] सिंह, रोहिणी अग्रवाल, हिंदी साहित्य में स्त्री लेखन, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013, पृ. 104।

[20] शर्मा, सविता, समकालीन हिंदी महिला लेखन और स्त्री विमर्श, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016, पृ. 146।

[21] पाण्डेय, मैनेजर, साहित्य और समाज, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010, पृ. 163।

[22] जैन, निर्मला, समकालीन हिंदी साहित्य और महिला लेखन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014, पृ. 151।

सुनीता जैन समकालीन हिंदी साहित्य की उन महत्वपूर्ण रचनाकारों में हैं जिन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से स्त्री-अनुभवों और मानवीय संवेदनाओं को व्यापक अभिव्यक्ति प्रदान की। उनका रचनाकर्म केवल स्त्री जीवन की समस्याओं और संघर्षों का चित्रण नहीं करता, बल्कि स्त्री के आत्मबोध, आत्मसम्मान और स्वतंत्र अस्तित्व की स्थापना का सशक्त प्रयास भी है। उनके साहित्य में स्त्री एक सजग, संवेदनशील और आत्मनिर्णय संपन्न व्यक्तित्व के रूप में उपस्थित होती है, जो अपने अधिकारों और गरिमा के प्रति सचेत है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सुनीता जैन की स्त्री-दृष्टि किसी उग्र वैचारिक आग्रह पर आधारित नहीं है, बल्कि वह जीवन के यथार्थ अनुभवों और मानवीय मूल्यों से जुड़ी हुई है। उन्होंने स्त्री-अस्मिता को परिवार, समाज और संस्कृति के व्यापक संदर्भों में समझने का प्रयास किया है। इसी कारण उनकी रचनाओं में स्त्री-विमर्श और मानवीय संवेदना एक-दूसरे के पूरक रूप में दिखाई देते हैं। उनके साहित्य का दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष उसकी गहन मानवीय संवेदना है। प्रेम, करुणा, आत्मीयता, स्मृति, पारिवारिक संबंधों की गरिमा तथा आधुनिक जीवन में बढ़ते अकेलेपन की अनुभूतियाँ उनके साहित्य को विशिष्ट बनाती हैं। प्रवासी जीवन के अनुभवों ने उनकी रचनाओं को वैश्विक दृष्टि प्रदान की है, जिसके कारण भारतीय सांस्कृतिक चेतना और सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सुनीता जैन का साहित्य स्त्री-अस्मिता और मानवीय संवेदना के अंतर्संबंध का महत्वपूर्ण दस्तावेज है। उन्होंने हिंदी साहित्य को ऐसी दृष्टि प्रदान की है जिसमें स्त्री की स्वतंत्र पहचान के साथ-साथ मानवीय संबंधों और मूल्यों की गरिमा भी सुरक्षित रहती है। यही विशेषता उनके साहित्य को समकालीन हिंदी साहित्य में विशिष्ट, प्रासंगिक और स्थायी महत्त्व प्रदान करती है।